डॉ0 इसाक 'अश्क'

अभिमत बदलते हैं	झूठ क्या बहाना क्या
रंग गिरगिट की तरह अभिमत बदलते हैं रोज करते हैं तरफदारी अंधेरों की रोशनी को लूटने वाले लुटेरों की इसमें नहीं होते सफल तो हाथ मलते हैं अवसरों की हुण्डियां बढ़कर भुनाने की जानते हैं हम कला झुकने झुकाने की यश मिले इसके लिए हर चाल चलते हैं	हम जैसे लोगों का ठौर क्या ठिकाना क्या भूख प्यास पीड़ाओं ने झिड़की दे–देकर पाला हमसे है दूर सुखद भोर का उजाला यह कहने लिखने में लाज क्या लजाना क्या पांव मिले भीलों जैसे अरूप सौ भटकन वाले इसी वजह राज भवन से अक्सर हम गए निकाले यह सच है इसमें अब झूठ क्या बहाना क्या?
	सम्पर्क– तराना, जिला–उज्जैन (म.प्र.)